डॉ॰ बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य (asst. prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर

पाठ्य सामग्री,
स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष, प्रथम पत्र तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी (100 अंक) के लिए।

दिनांक- 15.05.2020
(व्याख्यान संख्या- 26)

* हिन्दी साहित्येतिहास में उल्लेखनीय स्थान प्राप्त मिथिला के कवि नागार्जुन

प्रगतिवादी काव्यधारा के प्रमुखतम कवियों में से एक नागार्जुन ऐतिहासिक रूप से प्रगतिवाद के उग्र आंदोलनात्मक रचनात्मक स्वरूप के अवसान के बाद भी प्रगतिवादी नारेबाजी से दूर रहकर उसके समस्त सकारात्मक बिंदुओं को पल्लवित करते हुए तथा जन कल्याण के कारक तत्वों को अपनी रचनात्मकता के माध्यम से पोषित करने वाले कवि रहे हैं। केदारनाथ अग्रवाल के अतिरिक्त वे दूसरे ऐसे कवि हैं जिन्होंने प्रगतिवादी काव्यधारा को प्रकट रूप से प्रगतिवादी रखते हुए अक्षुण्ण बनाये रखने में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

नागार्जुन के काव्य की सबसे बड़ी विशेषताओं में से एक है सहजता। इनका काव्य लोकचेतना और यथार्थ अनुभव से अनुप्राणित है। प्रायः इन्होंने स्वाधीन भारत के शोषित, किसान और निर्धन वर्ग की पीड़ाओं को अपनी कविताओं का विषय बनाया है। इनकी भाषा में सच्चाई और यथार्थ अनुभूति के साथ-साथ अत्यंत तीखे एवं गहरे व्यंग्य हैं। इनकी सुप्रसिद्ध कविता 'प्रेत का बयान' में एक भूख से मृत प्राइमरी स्कूल के अध्यापक के माध्यम से स्वाधीन भारत में 'गरीबी हटाओ' की दुहाई देने वालों पर जो तीव्र परंतु करुण व्यंग्य किया गया है, वह देखने योग्य है:-

"साक्षी है धरती साक्षी है आकाश
और और और और और भले
नाना प्रकार की व्याधियाँ हों भारत में,
किन्तु उठा कर दोनों बाँह
किट किट करने लगा प्रेत
किन्तु
भूख या क्षुधा नाम हो जिसका
ऐसी किसी व्याधि का पता नहीं हमको।"

ऐसे ही व्यंग्यों के कारण नागार्जुन की व्यंग्य क्षमता उनके समकालीन कवियों में अलग से पहचानी जाती है। गद्य के क्षेत्र में रेणु की तरह ही काव्य क्षेत्र में भी नागार्जुन के साहित्य में आंचलिकता के साथ लोक जीवन की विविध अनुभूतियाँ मृदुल-आकर्षक रूप में भी व्यक्त हुई है और कहीं-कहीं उग्र रूप में भी प्रस्फुटित हुई है। नागार्जुन की रचनात्मकता के माध्यम से सदियों से समाज के उपेक्षित वर्ग, किसान, मजदूर, रिक्शा चालक आदि को सशक्त प्रखर वाणी मिली है। इनके साहित्य का केंद्र बिंदु प्रायः प्रकृत साधारण लघु मानव रहा है और उन्होंने ऐसे विषयों को भी साहित्य की कोटि में समाविष्ट किया है जिन्हें अन्य साहित्यकार साहित्येतर समझकर आशंकित भाव से किनारा करते रहे हैं। वस्तुतः वे लोकजीवन व क्षुद्र समझे जाने वाले सामान्य जनजीवन के प्रति आजीवन अपनी प्रतिबद्धता निभाते रहने वाले और विशेषतः उनके बोध योग्य स्तर पर अपनी काव्य वाणी को रखकर उसे लोकवाणी के रूप में परिणत करने की क्षमता से युक्त कवि रहे हैं। उनके साहित्य में सामान्य जनजीवन व लोक जीवन हमेशा संपृक्त रहे हैं। वे किसी वर्ग विशेष या राजनीतिक पार्टी से सम्बद्ध नहीं थे और यदि थे तो उनकी जनविरोधी भावनाओं तथा उनकी आनुवंशिक अधिकार समझने वाली मानसिकता पर करारा प्रहार करने वाले कवि के रूप में विख्यात रहे हैं। भले ही वे उनकी अपनी वामपंथी पार्टियाँ हों या तीन बंदरों वाले बापू के अनुयायी कांग्रेसियों की पार्टी। उन्होंने इंदिरा गांधी का नाम लेकर कटु विरोध किया था तो दूसरी ओर जयप्रकाश नारायण के आंदोलन के समर्थक होने पर भी जनता पार्टी के कुशासन तंत्र के प्रबल विरोधी थे। यही कारण है कि लालू के ईमानदारी रहित कुप्रशासन से क्षुब्ध होकर उन्होंने बिहार सरकार की ओर से दी जाने वाली पेंशन को भी ठुकरा दिया था तथा अपने सम्मान में आयोजित समारोह में उन्होंने मुख्यमंत्री लालू प्रसाद की कटु शब्दों में भर्त्सना की थी। वस्तुतः वे जनकल्याण के सिवा किसी प्रकार की दलबाजी या गुटबंदी के विरोधी थे। यही कारण है कि सत्ताधारियों की भर्त्सना की प्रक्रिया में उन्हें समूचे शासनतंत्र व राजनीतिक पार्टियों की अवहेलना वह विगर्हणा भी सहनी पड़ी, किंतु यह सब कुछ उनकी जनसामान्य के जीवन के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता को डिगा नहीं पायी। उनकी जनजीवन के प्रति संपृक्ति सदा बनी रही। अतः उन्हें सामान्य जनजीवन का कवि कहा जाता है।

ऐसा नहीं है कि नागार्जुन के काव्य में केवल कटु व्यंग्य एवं प्रखर विरोध के तत्त्व ही शामिल रहे हों। उनका काव्य इतना बहुमुखी तथा बहुआयामी रहा है कि यमुना के मखमली तट पर अपने अनेक छौनों को ममता, स्नेह व वात्सल्यवश दूध पिलाती सुअरी को देखकर उनकी कविता उसे भी 'मादरे हिन्द की बेटी' कहने में हिचकती नहीं है। गृहिणी में निश्छल आसक्ति के चित्र 'सिन्दूर तिलकित भाल' आदि में व्यंय की चुभन वाले इस कवि का दूसरा ही रूप दिखाते हैं। उनकी जनभाषा ऐसी कविताओं में सिद्धि की पराकाष्ठा पर पहुँची प्रतीत होती है।